महाकवि कालिदास के मेघदूत और हरिऔध के प्रिय प्रवास का अन्तः सम्बन्ध

विजय बहादुर यादव
असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर संस्कृत
श्री महंत रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुडकुडा
गाजीपुर उत्तर प्रदेश

संस्कृत जगत के अद्वितीय महा कवि कालिदास के खण्ड काव्य मेघदुतम से भला कौन परिचित नहीं है। इस कृति में महा कवि ने यक्ष और यक्षिणी के विरह वियोग का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है इसमें हेम माली नामक यक्ष जो अपने स्वामी कुबेर के द्वारा एक वर्ष के लिए शापित होकर राम गिरि के आश्रम में रहता था वह यक्ष मेघ को दूत बना कर अपनी प्रियतमा जो कि अलकापुरी में रहती है के पास भेजता है यह कालिदास की अत्यंत मनोहर और अमर रचना है जिसका प्रथम श्लोक इस प्रकार है -

कश्चितकांता विरह गुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तन्गामित महिमा वर्षभोग्येण भर्तु।
यक्षश्चक्रे जनक तनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छाया तरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।

वह बिरह व्यथित कामी यक्ष जड़ चेतन में भेद करने में अक्षम है जैसा कि महा कवि ने स्वयं कहा है

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
सन्देशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु।।

महा कवि कालिदास ने बड़े ही मनोहर छंदों से मेघ को अलकापुरी का मार्ग बताया है मार्ग में नदियों से जल भरने तथा स्थान-स्थान पर बरसने को भी बताया है। ताकि हल्केपन से शीघ्रता हो उसी प्रकार हिंदी के लोकप्रिय कवि अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध ने प्रियप्रवास में पवन को दूतिका बनाया है।

बैठी खिन्ना यक दिवस वे गेह में थर्थी अकेली।
आके आँसू दृग-युगल में थे धरा को भिगोते।।
आई धीरे इस सदन में पुष्प-सगन्ध को ले।
प्रातःवाली सुपवन इसी काल वातयों से।।

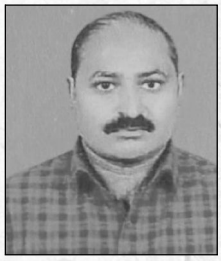

सन्तापों को विपुल बढ़ता देख के दुःखिता हो।
धीरे बोली स-दुःख उससे श्रीमती राधिका यों।।
प्यारी प्रातः पवन इतना क्यों मुझे है सताती।
क्या तू भी है कलुषित हुई काल की क्रूरता से।।

श्रीमती राधिका अपने प्रियतम श्री कृष्ण को याद करते हुए कहती हैं कि-

मेरे प्यारे नव जलद से कंज से नेत्रवाले।
जाके आए न मधुबन से औ न भेजा सँदेसा।।
मैं रो रो के प्रिय-विरह से बावली हो रही हूँ।
जा के मेरी सब दुःख कथा श्याम को तू सुना दे।।

श्रीमती राधिका पवन को समझाते हुए कहती हैं कि-

तुम अपने सुख के लिए कहीं मेरा दुःख भूल मत जाना।।
ज्यों ही मेरा भवन तज तू अल्प आगे बढ़ेगी।
शोभावाली सुखद कितनी मंजु कुंजें मिलेंगी।।
प्यारी छाया मृदुल स्वर से मोह लेंगी तुझे वे।
तो भी मेरा दुःख लख वहाँ जा न विश्राम लेना ।।

श्रीमती राधिका जो कि स्वयं अत्यंत दुखिता हैं परन्तु उनको दूसरों के दुखों का भी एहसास है। ठीक वैसे ही जैसे कालिदास के यक्ष को नदियों, पर्वतों तथा क्लान्त पीड़ितजनों के दुःख का एहसास है।

जाते-जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे।
तो जाके सन्निकट उसकी क्लांतियों को मिटाना।।
धीरे-धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सदगंधों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।।

कोई क्लान्ता कृषक ललना खेत में जो दिखावे।
धीरे-धीरे परस उसकी क्लांतियों को मिटाना।।
जाता कोई जलद यदि हो व्योम में तो उसे ला।
छाया द्वारा सुखित करना तप्त भूतांगना को।

जैसे महाकवि कालिदास का यक्ष मेघ को अपनी प्रियतमा की पहचान कुछ इस प्रकार बताता है।

तन्वीश्यामां शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी।
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणां निम्ननाभि:।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनमा स्तनाभ्यां
या तत्र स्याद् युवतिविषयेसृष्टिरायेव धातुः।।

उसी प्रकार हरिऔध जी की श्रीमती राधिका पवनरूपी दूतिका को अपने प्रियतम श्री कृष्ण की पहचान बतलाती हैं तू देखेगी जलद तन को जा वहीं तद्गता हो।

होंगे लोने नयन उनके ज्योति उत्कीर्णकारी
मुद्रा होगी वर बदन की मूर्ति सी सौम्यता की।
सीधे-साधे वचन उनके सिक्त होंगे सुधा से ।।
नीले फूले कमल दल सी गात की श्यामता है।
पीला प्यारा वसन कटि में पैन्हते हैं फबीला।
छूटी काली अलक मुख की कान्ति को है बढाती।
सद्वस्त्रों में नवल तन की फूटती सी प्रभा है।

श्रीमती राधिका पवन से कहती हैं-

तेरे में है न यह गुण जो तूं व्यथाएं सुनाये।
व्यापारों को प्रखर गति और युक्तियों से चलाना।।
जो चित्रों में विरह विधुरा का मिले चित्र कोई ।
तो जा जा के निकट उसको भाव से यों हिलाना।।
प्यारे होके चकित जिससे चित्र की ओर देखें।
आशा है यूँ सुरति उनको हो सकेगी हमारी।।
कोई प्यारा कुसुम कुम्हला गेह में जो पड़ा हो।
तो प्यारे के चरण पर ला डाल देना उसी को।।
यों देना ऐ पवन बतला फुल सी एक बाला।
म्लाना हो हो कमल पग को चूमना चाहती है।।

और अन्त में श्रीमती राधिका कहती हैं -

पूरी होवे न यदि तुझसे अन्य बातें हमारी।
तो तूं मेरी विनय इतनी मान ले और चली जा।।
छू के प्यारे कमल पग को प्यार के साथ आ जा।
जी जाउंगी हृदय तल में मैं तुझी को लगा के।।

***

माता-पिता

- ज्योति शर्मा

बी.ए. प्रथम वर्ष

फूल कभी बार-बार नहीं खिलते
जीवन कभी बार-बार नहीं मिलता
मिलने को तो बहुत लोग मिल जाते हैं...
लेकिन हजारों गलतियों को माफ करने
वाले माँ-बाप नहीं मिलते।

माता-पिता भगवान की ओर से सबसे कीमती उपहार है, और हमें माँ-पापा का सम्मान करना चाहिए। माता-पिता वह हैं जो जीवन के हर चरण में हमारा समर्थन करते हैं, और हमें सही दिशा में ले जाने का प्रयास करते हैं।

माता-पिता के अलावा कोई नहीं हैं, जो बिना किसी शर्त के सही मायने में हमारी देखभाल कर सके। माता-पिता का प्यार बिना शर्त है और उनकी उपस्थिति हमें दुनियां में भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में महसूस कराते हैं। ये हर समय हमारी खुशी सफलता की कामना करते हैं। माता-पिता के बिना कोई खुशी खुशी नहीं हैं, वे हमारे संरक्षक स्वर्गदूत हैं, जो हमें खुश रखने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। हमें अपने माता-पिता के प्यार और बलिदान के लिए उनकी सराहना करना कभी नहीं भूलना चाहिए।

***